सूरह — एक कहानी

सूरह अल-मुम्तहिना

जाँची जाने वाली

पूरा सफ़र — वफ़ादारी, इंसाफ़, और जाँचा हुआ दिल —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 60 • 13 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

या अय्युहल्-लज़ीन आमनू ला तत्तख़िज़ू 'अदुव्वी व 'अदुव्वकुम औलिया
1. ऐ ईमान वालो! मेरे और अपने दुश्मन को दोस्त मत बनाओ।

लन तन्फ़-'अकुम अर्हामुकुम व ला औलादुकुम यौमल्-क़ियामह
3. क़ियामत के दिन तुम्हें तुम्हारे रिश्तेदार और तुम्हारी औलाद कोई फ़ायदा न देंगे।

क़द कानत लकुम उस्वतुन हसनतुन फ़ी इब्राहीम वल्लज़ीन म'अह
4. तुम्हारे लिए इब्राहीम और उनके साथियों में एक बेहतरीन नमूना है।

'असल्-लाहु अंय्-यज्'अल बैनकुम व बैनल्-लज़ीन 'आदैतुम मिन्हुम मवद्दह
7. उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के दरमियान मोहब्बत डाल दे जिनसे तुम्हारी दुश्मनी है।

अन तबर्रूहुम व तुक़्सितू इलैहिम
8. कि तुम उनके साथ भलाई और इंसाफ़ करो।

इन्नल्-लाह युहिब्बुल्-मुक़्सितीन
8. बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों से मोहब्बत करता है।

चोटियों में छुपा ख़त

बेटा, ये सूरह सीरत के सबसे ड्रामाई सिक्योरिटी वाक़िआत में से एक पर खुलती है — एक पोशीदा ख़त, घोड़ों पर पीछा, और वफ़ादारी का एक ऐसा सबक़ जिसे उम्मत आज भी जीती है।

ये फ़तह-ए-मक्का से ठीक पहले की बात है। नबी ﷺ मुकम्मल राज़दारी में कूच की तैयारी कर रहे थे — क़रीबी सहाबा तक मंज़िल नहीं जानते थे — क्योंकि आप ﷺ मक्का को बिना ख़ून-ख़राबे के लेना चाहते थे, और इस रहमत की कुंजी **हैरत** में डालना था। और उन्हीं दिनों में, एक सहाबी — **हातिब इब्ने अबी बल्ता'आ (रज़ि0)**, बद्र के एक पुराने मुजाहिद — ने ख़ामोशी से क़ुरैश को एक ख़त लिखा, उन्हें ख़बरदार करते हुए कि अल्लाह के रसूल आ रहे हैं। उसने वो ख़त एक सफ़र पर निकलने वाली औरत को दिया, जिसने उसे छुपा लिया और रवाना हो गई।

मगर **कोई राज़ आसमान से आगे नहीं भागता**, बेटा। वही ने नबी ﷺ को इत्तिला दी, और आपने अली, ज़ुबैर और मिक़दाद (रज़ि0) को ठीक हिदायात के साथ दौड़ाया: ख़ाख़ के बाग़ पर तुम्हें एक सफ़र करती औरत मिलेगी; उसके पास एक ख़त है। उन्होंने उसे ठीक वहीं जा लिया। उसने हर चीज़ का इनकार किया; उन्होंने उसका सामान तलाश किया — कुछ नहीं। फिर अली ने कहा: अल्लाह की क़सम, अल्लाह के रसूल झूट नहीं बोलते — ख़त निकालो, वरना हम तुम्हारी तलाशी लेंगे। घिरी हुई, उसने ख़त अपनी गुंधी हुई **चोटी** के अंदर से निकाल दिया।

उसने बद्र देखा था

मदीना वापस, ख़त नबी ﷺ के सामने पढ़ा गया। उमर (रज़ि0) भड़क उठे: 'या रसूलल्लाह, मुझे इस मुनाफ़िक़ की गर्दन मारने दीजिए!' हर आँख हातिब की तरफ़ मुड़ी। और सुनिए, बेटा, उनका उज़्र — क्योंकि नबी ﷺ ने ख़ुद उसे सच मान कर क़ुबूल किया: 'या रसूलल्लाह, मेरे ख़िलाफ़ जल्दी न करें। मैं एक ऐसा आदमी हूँ जो क़ुरैश से जुड़ा हुआ है मगर उनके नसब से नहीं; आपके साथ जो मुहाजिरीन हैं उनके मक्का में रिश्तेदार हैं जिनके क़बीले उनके घरवालों की हिफ़ाज़त करते हैं — मेरा कोई नहीं। तो मैंने चाहा कि उन पर कोई एहसान कमा लूँ जिसकी वजह से वो मेरे रिश्तेदारों की हिफ़ाज़त करें। मैंने ये कुफ़्र की वजह से नहीं किया, न इस्लाम के बाद कुफ़्र पर रज़ामंदी से।'

नबी ﷺ ने फ़रमाया: 'इसने तुमसे सच कहा है।' और फिर आपने ﷺ वो अल्फ़ाज़ कहे जो आज भी दिलों को उम्मीद से कँपा देते हैं: 'तुम्हें क्या मालूम, उमर — शायद अल्लाह ने **बद्र वालों** की तरफ़ देखा और फ़रमाया: **जो चाहो करो, मैंने तुम्हें बख़्श दिया। **' उमर की आँखें बह पड़ीं, और उन्होंने कहा: अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं।

इस मंज़र के दोनों हिस्से थाम लीजिए, बेटा। **ग़लती असली थी** — और आयतें नाज़िल हुईं उसे नाम ले कर: 'ऐ ईमान वालो! **मेरे** दुश्मन और **अपने** दुश्मन को दोस्त मत बनाओ, उनकी तरफ़ मोहब्बत बढ़ाते हुए, जब कि उन्होंने उस हक़ का

इनकार किया जो तुम्हारे पास आया...' कोई ख़ानदानी ख़ौफ़, कोई करियर की दलील, कोई 'हिफ़ाज़त की हिकमत-ए-अमली' मोमिनीन के राज़ उन लोगों तक पहुँचाने का जवाज़ नहीं जो उनसे बर-सर-ए-जंग हैं। **और** वो आदमी तबाह न किया गया: एक मानी हुई ग़लती, ईमानदारी से इक़रार की हुई, एक उम्र-भर की क़ुर्बानी को न मिटा सकी। **उसूल में मज़बूती, इंसान के साथ नरमी** — नबी ﷺ का तराज़ू, और हमारा।

रिश्तेदार तुम्हारे लिए क्या नहीं कर सकते

फिर ये बात उस गहरी जेब में दाबी जाती है जहाँ ग़लत वफ़ादारियाँ छुपती हैं — ख़ानदानी जज़्बात: '**लन तन्फ़-'अकुम अर्हामुकुम व ला औलादुकुम यौमल्-क़ियामह** — क़ियामत के दिन तुम्हें तुम्हारे **रिश्तेदार** या तुम्हारी **औलाद** कोई फ़ायदा न देंगे; वो तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा।'

हातिब ने ये दलील दी थी: मक्का में मेरे ख़ानदान को एक ढाल चाहिए। अल्लाह ने इस दलील का उसकी जड़ से जवाब दिया: **वही रिश्तेदार जिनके लिए राज़ लीक किए गए उस दिन तराज़ू में एक दाना भी नहीं उठा सकते जब वो मायने रखेगा।** और उन्होंने ख़बरदार किया कि छुपी मोहब्बतों के लिए कोई छुपने की जगह नहीं: 'तुम उनकी तरफ़ **छुप कर** मोहब्बत बढ़ाते हो — जब कि मैं उस से सबसे ज़्यादा वाक़िफ़ हूँ जो तुम **छुपाते** हो और जो **ज़ाहिर** करते हो।' **दिल के ज़ाती रुझान, बेटा, इतनी खुले तौर पर पढ़े जाते हैं जैसे अख़बार की सुर्ख़ियाँ।**

इब्राहीम का नमूना — एक इस्तिस्ना के साथ

सही वफ़ादारी की शक्ल के लिए, सूरह फिर अंबिया के बाप की तरफ़ इशारा करती है: 'तुम्हारे लिए **पहले ही** इब्राहीम और उनके साथियों में एक **उस्वतुन हसनह** — बेहतरीन नमूना — है, जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा: हम तुम से और उस से बेज़ार हैं जिसे तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो...' बुतों और उनकी इबादत से साफ़ जुदाई — एक ज़ाती पसंद नहीं, बल्कि एलानिया।

फिर भी उस ईमानदारी के साथ जो सिर्फ़ वही ले कर आती है, क़ुरआन नमूने में **एक इस्तिस्ना** की निशानदेही करता है: '**सिवाए** इब्राहीम के अपने बाप से ये कहने के: मैं ज़रूर आपके लिए मग़फ़िरत माँगूँगा...' — एक नरम-दिल बेटे का वादा जो उस से पहले किया गया जब वो साफ़ हुआ कि उसका बाप अल्लाह का दुश्मन हो कर मरेगा, जिसके बाद इब्राहीम उस से भी बेज़ार हो गए। **इब्राहीम की हर चीज़ में पैरवी कीजिए, बेटा — सिवाए वहाँ जहाँ उनकी नरम-दिली हुक्म से आगे निकल गई**; अंबिया के नमूने भी हमें ठीक-ठीक तफ़सीलात के हाशियों के साथ दिए जाते हैं।

और फिर इब्राहीम का क़ाफ़िला हमें उनकी दुआ सिखाता है — इसे याद कर लीजिए, ये एक मुसाफ़िर का क़ुतुब-नुमा है: '**रब्बना 'अलैक तवक्कल्ना व इलैक अनब्ना व इलैकल्-मसीर** — ऐ हमारे रब, आप पर ही हमने भरोसा किया, और आप ही की तरफ़ रुजू किया, और आप ही की तरफ़ लौटना है। **रब्बना ला तज्'अल्ना फ़ितनतल्-लिल्-लज़ीन कफ़रू** — ऐ हमारे रब, हमें उन लोगों के लिए **आज़माइश** मत बना जो कुफ़्र करते हैं — **वग़्फ़िर लना रब्बना** — और हमें बख़्श दे, ऐ हमारे रब।'

वो दरमियानी लाइन बारीक और अज़ीम है, बेटा: **या अल्लाह, हमारी कमज़ोरी या हमारी बद-तमीज़ी किसी के तेरे दीन को बुरा समझने की वजह न बन जाए।** एक मोमिन का किरदार दीन का इश्तिहार है — ये दुआ माँगती है कि इश्तिहार कभी झूट न बोले।

शायद अल्लाह मोहब्बत डाल दे

और अब, बेटा — उन तमाम मज़बूत लकीरों के बाद — हैरत-अंगेज़ नरमी की एक आयत आती है, एक क़िले की दीवार में खिड़की की तरह रखी हुई: '**'असल्लाहु अंय्-यज्'अल बैनकुम व बैनल्-लज़ीन 'आदैतुम मिन्हुम मवद्दह** — **शायद** अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के दरमियान **मोहब्बत** डाल दे जिन्हें तुमने **दुश्मन** समझा। और अल्लाह क़ादिर है; और अल्लाह बख़्शने वाले, रहीम हैं।'

आज का दुश्मन दाइमी नहीं, आयत सरगोशी करती है — दिल अर-रहमान की उँगलियों के दरमियान हैं। और तारीख़ ने इसे चंद सालों में मुहर लगा दी: मक्का फ़तह हुआ, और वही लोग जो कभी मैदान-ए-जंग में मिले थे — ख़ालिद, इकरिमा, अबू सुफ़ियान और हज़ारों और — इस्लाम में दाख़िल हुए और इस उम्मत के भाई, सरदार और शुहदा बन गए।

तो मोमिन लकीरें खींचता है **बिना नफ़रत के ज़हर के**, बेटा: आज मज़बूत, और फिर भी लकीर की दूसरी तरफ़ वाले शख़्स के लिए दुआ करता हुआ — क्योंकि **कल वो आपकी सफ़ में खड़ा हो सकता है।**

सबसे ज़्यादा ग़लत समझी जाने वाली आयत — समझी गई

और अब, बेटा, वो दो आयतें जिन्हें हर मुसलमान को ज़ुबानी याद होना चाहिए, क्योंकि दुनिया इस दीन के बारे में जो सबसे बड़ा इल्ज़ाम लगाती है उसका जवाब यही हैं:

'**ला यन्हाकुमुल्लाहु 'अनिल्-लज़ीन लम युक़ातिलूकुम फ़िद्-दीनि व लम युख़्रिजूकुम मिन दियारिकुम — अल्लाह तुम्हें उन लोगों के बारे में मना नहीं करता जो दीन के मामले में तुम से नहीं लड़े और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला — अन तबर्रूहुम व तुक़्सितू इलैहिम — कि तुम उनके साथ भलाई करो और उनके साथ इंसाफ़ करो। इन्नल्लाह युहिब्बुल्-मुक़्सितीन — बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों से मोहब्बत करता है।**'

बेटा, उस लफ़्ज़ पर रुकिए जो अल्लाह ने चुना: '**तबर्रूहुम**' — 'बिर्र' से, वही लफ़्ज़ जो **माँ-बाप** के साथ हुस्न-ए-सुलूक के लिए इस्तेमाल होता है। सिर्फ़ 'उन्हें बर्दाश्त करो' नहीं, 'उन्हें अकेला छोड़ दो' नहीं — बल्कि उनके साथ वो भलाई करो जो अपने वालिदैन के साथ की जाती है। और '**तुक़्सितू**' — उनके साथ **इंसाफ़** करो, यहाँ तक कि जब वो आपके दीन के न हों।

और अगली आयत ठीक-ठीक बताती है कि पाबंदी किस पर है: 'अल्लाह तुम्हें सिर्फ़ उन लोगों से दोस्ती करने से मना करता है **जिन्होंने दीन के मामले में तुम से जंग की और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में एक दूसरे की मदद

की।**'

तो लकीर साफ़ है, बेटा — और वो **मज़हब** पर नहीं, **जंग** पर खींची गई है। जो आपसे नहीं लड़ता: उसके साथ भलाई और इंसाफ़। जो आपसे लड़ता है और आपको निकालता है: उसे अपना राज़दार मत बनाइए। **ये उस दीन का इंसाफ़ है जिसे लोग सख़्त कहते हैं।**

और वो आख़िरी जुमला दिल पर लिख लीजिए: '**इन्नल्लाह युहिब्बुल्-मुक़्सितीन**' — अल्लाह **इंसाफ़ करने वालों** से मोहब्बत करता है। ग़ौर कीजिए ये नहीं कहा 'मुसलमानों के साथ इंसाफ़ करने वालों से' — बस इंसाफ़ करने वालों से। इंसाफ़ का कोई मज़हब नहीं होता, बेटा; **ये अल्लाह की एक सिफ़त है, और जो उसे बरतता है वो उसकी मोहब्बत कमाता है।**

जाँची हुई औरतें, और वो बैअत

और सूरह अपना नाम यहाँ से पाती है, बेटा — **अल-मुम्तहिना**, जाँची जाने वाली।

सुलह-ए-हुदैबिया के बाद, कुछ औरतें मक्का से भाग कर मदीना आईं, ईमान की हालत में। मुआहिदे में लौटाने की शर्त थी, मगर अल्लाह ने हुक्म दिया: '**या अय्युहल्-लज़ीन आमनू इज़ा जा-अकुमुल्-मु'मिनातु मुहाजिरातिन फ़म्तहिनूहुन्न** — ऐ ईमान वालो! जब मोमिन औरतें हिजरत कर के तुम्हारे पास आएँ तो **उन्हें जाँच लो** — अल्लाहु अ'लमु बि-ईमानिहिन्न — अल्लाह उनके ईमान को ख़ूब जानता है। तो अगर तुम उन्हें मोमिन पाओ तो उन्हें मुनकिरों की तरफ़ **वापस मत भेजो**।'

बेटा, ग़ौर कीजिए वो जाँच क्या थी: कोई जिस्मानी इम्तिहान नहीं — बल्कि उनसे पूछा जाता कि वो किसी शौहर से नाराज़गी की वजह से नहीं आईं, न किसी दुनयवी लालच से, बल्कि **सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल की मोहब्बत में**। और फिर हुक्म: उन्हें वापस मत भेजो — और उनके पिछले शौहरों को उनका ख़र्च किया हुआ महर लौटा दो। **इंसाफ़ दोनों तरफ़**: औरत की आज़ादी महफ़ूज़, और मर्द का माली हक़ अदा।

और आख़िर में, बेटा, वो आयत जो औरतों की बैअत को हमेशा के लिए दर्ज कर देती है:

'**या अय्युहन्-नबिय्यु इज़ा जा-अकल्-मु'मिनातु युबायि'अ्नक** — ऐ नबी! जब मोमिन औरतें आपके पास **बैअत** करने आएँ — इस बात पर कि वो अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराएँगी, चोरी न करेंगी, बद-कारी न करेंगी, अपनी औलाद को क़त्ल न करेंगी, कोई बोहतान न गढ़ेंगी, और किसी नेक बात में आपकी ना-फ़रमानी न करेंगी — **फ़-बायि'अ्हुन्न वस्तग़्फ़िर लहुन्नल्लाह** — तो उनसे बैअत ले लीजिए और उनके लिए अल्लाह से मग़फ़िरत माँगिए।'

बेटा, इस मंज़र की अज़मत महसूस कीजिए। एक ऐसे मुआशरे में जहाँ बेटियाँ ज़िंदा गाड़ी जाती थीं, अल्लाह के रसूल ﷺ के सामने औरतें **अपनी ज़ाती बैअत** कर रही हैं — अपने बाप के ज़रिए नहीं, अपने शौहर के ज़रिए नहीं। उनका ईमान उनका अपना है, उनका अहद उनका अपना है, और उनका हिसाब उनका अपना है।

और उस फ़ेहरिस्त में 'अपनी औलाद को क़त्ल न करेंगी' का ज़िक्र देखिए — ये वही ज़ुल्म था जो सदियों से चल रहा था, और इसे बैअत की शर्तों में डाल कर हमेशा के लिए ख़त्म कर दिया गया।

और सूरह उसी तंबीह पर बंद होती है जिस से शुरू हुई थी: 'ऐ ईमान वालो! उन लोगों को दोस्त मत बनाओ जिन पर अल्लाह ग़ज़बनाक हुआ... जो आख़िरत से यूँ मायूस हो चुके हैं जैसे मुनकिर क़ब्रों वालों से मायूस हैं।' **एक दायरा मुकम्मल, बेटा: वफ़ादारी से शुरू, वफ़ादारी पर ख़त्म — और उन दोनों के दरमियान इंसाफ़, नरमी और उम्मीद। **

इस सूरह से क्या सीखा

1. कोई राज़ आसमान से आगे नहीं भागता — और कोई ख़ानदानी ख़ौफ़ अमानत तोड़ने का जवाज़ नहीं।

2. उसूल में मज़बूती, इंसान के साथ नरमी: ग़लती का नाम लिया गया, और आदमी बचा लिया गया।

3. उस दिन रिश्तेदार और औलाद तराज़ू में एक दाना नहीं उठा सकते — जिनके लिए

हम गुनाह करते हैं वही हमें बचा नहीं सकेंगे।

4. इब्राहीम (अलैहि0) की पैरवी कीजिए — और वो दुआ याद रखिए: 'हमें उनके लिए आज़माइश मत बना' — आपका किरदार दीन का इश्तिहार है।

5. लकीरें खींचिए बिना नफ़रत के ज़हर के — आज का दुश्मन कल आपकी सफ़ में खड़ा हो सकता है।

6. जो आपसे नहीं लड़ता उसके साथ **बिर्र** और **क़िस्त** — वही भलाई जो माँ-बाप के साथ की जाती है; और अल्लाह हर इंसाफ़ करने वाले से मोहब्बत करता है।

7. हर जान अपने ईमान की ख़ुद ज़िम्मेदार है — औरतों ने अपनी बैअत ख़ुद की, और वही अहद हमेशा के लिए दर्ज हो गया।

या अल्लाह, हमारी वफ़ादारियाँ ख़ालिस कर दीजिए, हमें इंसाफ़ करने वालों में शामिल फ़रमाइए, और हमें किसी के लिए आपके दीन से दूरी का सबब मत बनाइए। आमीन।